IAS GS World PCS

Committed To Excellence

Zonal Councils

1 - 31 Jan, 2020

पत्र सूचना कार्यालय
PRESS INFORMATION BUREAU
भारत सरकार

PIB

सामान्य अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ संस्थान, जिसका लक्ष्य आपको सफलता दिलाना है...

ISO 9001:2015 Certified

IAS GS World PCS

Committed To Excellence

पत्राचार पाठ्यक्रम

Distance Learning Programme

.....उच्चस्तरीय एवं विश्वसनीय अध्ययन सामग्री

सिविल सेवा परीक्षा एक ऐसी परीक्षा है, जिसमें सभी वर्ग, सभी क्षेत्रों, सभी एकेडमिक बैकग्राउंड के अभ्यर्थी प्रतिस्पर्धा करते हैं। ऐसे में इस परीक्षा में सफलता पाने हेतु एक बेहतर अध्ययन सामग्री तथा सटीक, गुणवत्तापूर्ण एवं व्यापक मार्गदर्शन की हमेशा ही इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रही है। GS World सिविल सेवा के क्षेत्र में व्यापक, गुणवत्तापूर्ण एवं सटीक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए बनाई गई एक संस्था है।

GS World ने स्तरीय शिक्षा का एक मानक स्थापित किया है। संघीय एवं प्रांतीय सिविल सेवा परीक्षा में इसके निर्देशन में सैकड़ों अभ्यर्थी सफल हुए हैं। वर्तमान में भारत के सुप्रसिद्ध अनुभवी अध्यापक एवं शिक्षाविद् GS World के साथ संबद्ध हैं।

सिविल सेवा परीक्षा के तीनो चरणों-प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार के स्तर पर कोचिंग के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान करना, इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है।

अगर आप किसी कारणवश हमारे नियमित कक्षा कार्यक्रम से जुड़ पाने में असमर्थ है, तो हमारे पत्राचार पाठ्यक्रम से जुड़ सकते हैं, तथा यह आपकी तैयारी को एक मजबूत आधार देगा।

- GS World के पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से आप अपने कार्य से जुड़े रहते हुए भी नियमित कक्षा कार्यक्रम के समतुल्य अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।
- एक बेहतर अध्ययन सामग्री के अनुरुप GS World के पत्राचार कार्यक्रम में तथ्यात्मक जानकारी एवं अवधारणात्मक जानकारी का बेहतर संतुलन है। इसी वजह से सिविल सेवा परीक्षा के बदलते पाठ्यक्रम के अनुरूप हमारी पत्राचार अध्ययन सामग्री सबसे उपयुक्त है।
- GS World का पत्राचार पाठ्यक्रम एक मात्र ऐसा पत्राचार पाठ्यक्रम है जहां पर दोहरे संवाद की व्यवस्था है। यहां पर जो अभ्यर्थी हमारे पत्राचार पाठ्यक्रम से जुड़ते हैं वे समय-समय पर अपने उत्तर लेखन की जांच भी करवा सकते हैं। आप अपने उत्तरों को लिखकर हमारे मेल आईडी (Mail ID) पर भेज सकते हैं। Email : gsworldias@gmail.com

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

Distance Learning Program- DLP

Fee ₹ 18,500/-

GS (Pre. + Mains) + (Printed Booklet) + Class Notes + Class Test + Current Affairs Notes + Current Test

Fee ₹ 22,500/-

GS (Pre. + Mains) + (Printed Booklet) + Class Notes + Class Test + NCERT Pre. + Mains Test + Current Affairs Notes + Magazine & TV Debate Test

Visit us our You Tube Channel GS World IAS Institute & Subscribe...

गगनयान मिशन

PIB, [01 Jan, 2020]

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में इसरो के अध्यक्ष ने बताया कि गगनयान मिशन के अंतर्गत अंतरिक्ष में भेजने के लिए चार अंतरिक्ष यात्रियों का चयन कर लिया गया है।
- साथ ही इन्होंने यह भी बताया कि 2019 में इसरो द्वारा छह प्रक्षेपण यानों का इस्तेमाल किया गया था और सात उपग्रह अभियान पूरे किए गए थे।

गगनयान मिशन के बारे में

- भारत के 72वें स्वतंत्रता दिवस पर देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा की कि भारत 2022 में अंतरिक्ष में अंतरिक्ष यात्री भेजेगा। इस मिशन को गगनयान मिशन का नाम दिया गया है।

मिशन के उद्देश्य

- देश में विज्ञान और तकनीक के स्तर में वृद्धि।
- कई संस्थान, शिक्षा और उद्योग को एक राष्ट्रीय परियोजना में शामिल होने का अवसर।
- औद्योगिक विकास में सुधार।
- युवाओं को प्रेरणा देने वाला।
- सामाजिक लाभ के लिए प्रौद्योगिकी का विकास।
- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में सुधार भारतीय मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम।

भारत के लिए मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन की प्रासंगिकता

- **उद्योगों को बढ़ावा :** भारतीय उद्योग अत्यधिक माँग वाले अंतरिक्ष अभियानों में भाग लेकर बड़े अवसर प्राप्त करेंगे। भारतीय निजी क्षेत्र से लगभग 60% उपकरण का इस्तेमाल गगनयान मिशन में होगा।
- **रोजगार :** इसरो प्रमुख के अनुसार, गगनयान मिशन से 15,000 नए रोजगार के अवसर पैदा होंगे, उनमें से 13,000 निजी उद्योग में और अंतरिक्ष संगठन को 900 की अतिरिक्त जनशक्ति की आवश्यकता होगी।
- **अनुसंधान और विकास को बढ़ावा मिलेगा :** यह बेहतर अच्छे अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास को बढ़ावा देगा। बेहतर उपकरण के साथ बड़ी संख्या में शोधकर्ता एस्ट्रो-जीव विज्ञान, संसाधन खनन, ग्रह रसायन, ग्रह कक्षीय कलन और जैसे कई अन्य क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण शोध करेंगे।

मुख्य बिंदु

- इसके लिए शुरू में अंतरिक्ष में पृथ्वी के ऊपर 400 km की दूरी पर स्थित परिक्रमा पथ पर 2-3 अंतरिक्ष यात्रियों को 7 दिन के लिए भेजा जाएगा।
- इसके लिए भारत सरकार ने पिछले बजट में 12.4 billion की राशि निर्धारित कर दी है।
- इस अंतरिक्षयान का प्रक्षेपण जीएसएलवी मार्क III द्वारा किया जाएगा।
- पिछले वर्ष ISRO ने "PAD ABORT" अर्थात् अंतरिक्ष यात्री उद्धार प्रणाली का सफल परीक्षण किया था।
- इस प्रणाली के माध्यम से यदि कभी प्रक्षेपण विफल हो जाता है तो उस समय अंतरिक्ष यात्री उससे बाहर निकलकर अपने प्राण बचाने में समर्थ हो जाता हैं।

तकनीकी चुनौतियाँ

- ISRO को तीन प्रमुख क्षेत्रों में ध्यान देने की जरूरत है – i) पर्यावरण नियंत्रण और जीवनरक्षक प्रणाली (ECLS system) ii) चालक दल सुरक्षा प्रणाली और iii) फ्लाइट सूट सुविधा। इन चुनौतियों के समाधान करने के लिए सरकार ने आवश्यक तैयारी हेतु 145 करोड़ रुपए स्वीकृत किये हैं।

जोनल काउंसिल

PIB, [03 Jan, 2020]

संदर्भ

- पश्चिमी जोनल कांउसिल की 25वीं बैठक जनवरी 2020 में होगी। महाराष्ट्र इस बार प्रमुख को-ओर्डिनेटर समन्वयक होगा।

जोनल काउंसिल

- यह एक वैधानिक निकाय है, न कि संवैधानिक निकाय, जिसे राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 के तहत् स्थापित किया गया है।

उद्देश्य

- अंतरराज्यीय सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देना।

इसके पाँच क्षेत्रीय परिषदें हैं:

- उत्तरी क्षेत्रीय परिषद, जिसमें हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली का राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ शामिल हैं।
- केंद्रीय आंचलिक परिषद्, जिसमें छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश शामिल हैं।
- पूर्वी आंचलिक परिषद्, जिसमें बिहार, झारखंड, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल राज्य शामिल हैं।
- पश्चिमी आंचलिक परिषद्, जिसमें गोवा, गुजरात, महाराष्ट्र और केंद्र शासित प्रदेश दमन और दीव तथा दादरा और नागर हवेली शामिल हैं।
- दक्षिणी क्षेत्रीय परिषद्, जिसमें आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी शामिल हैं।

- उत्तर पूर्वी राज्य यानी (i) असम (ii) अरुणाचल प्रदेश (iii) मणिपुर (iv) त्रिपुरा (v) मिजोरम (vi) मेघालय (vii) सिक्किम और (viii) नागालैंड जोनल काउंसिल में शामिल नहीं हैं और उनकी विशेष समस्याओं को उत्तर पूर्वी परिषद अधिनियम, 1972 के तहत् स्थापित उत्तर पूर्वी परिषद् द्वारा देखा जाता है।

संरचना

- **अध्यक्ष :** इनमें से प्रत्येक परिषद् का अध्यक्ष केंद्रीय गृह मंत्री होता है।
- **वाइस चेयरमैन :** प्रत्येक क्षेत्र में शामिल राज्यों के मुख्यमंत्री रोटेशन द्वारा उस क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय परिषद के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते है
- **सदस्य :** मुख्यमंत्री और दो अन्य मंत्री राज्यपाल के द्वारा में प्रत्येक राज्य से और दो सदस्य संघ शासित प्रदेशों से नामित होते हैं।
- केंद्रीय मंत्रियों को भी आवश्यकता के आधार पर जोनल काउंसिल की बैठकों में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

इसकी स्थापना के मुख्य उद्देश्य हैं:

- राष्ट्रीय एकता को सामने लाना।
- विचारों और अनुभवों के सह-संचालन के लिए केंद्र और राज्यों को सक्षम बनाना।
- विकास परियोजनाओं के सफल और त्वरित निष्पादन के लिए राज्यों के बीच सहयोग का माहौल स्थापित करना।

उजाला कार्यक्रम के पांच वर्ष पूरे हुए

PIB, [05 Jan, 2020]

संदर्भ

- हाल ही में 5 जनवरी, 2020 को उजाला कार्यक्रम (Unnat Jyoti by Affordable LEDs for All)तथा SLNP (LED Street Lighting National Programme) के पाँच वर्ष पूरे हुए।
- इन कार्यक्रमों का क्रियान्वयन EESL (Energy Efficiency Services Limited) द्वारा किया जा रहा है।

मुख्य बिंदु

- SLNP कार्यक्रम के अंतर्गत अब तक 1.03 करोड़ स्ट्रीट लाइट लगाई गई हैं, जिससे 6.97 बिलियन किलोवॉट प्रतिवर्ष ऊर्जा की बचत हुई है।
- इससे पीक डिमांड में 1161 मेगावॉट की कमी आई है और ग्रीन हाउस गैस उत्सलर्जन में प्रतिवर्ष 4.8 मिलियन टन कार्बन डाइ ऑक्साइड की कमी आई है।
- उजाला कार्यक्रम के तहत अब तक 36.13 करोड़ एलईडी बल्ब वितरित किये जा चुके हैं। इससे ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में वार्षिक रूप से 38 मिलियन टन की कमी हुई है।
- SLNP कार्यक्रम के तहत मार्च, 2020 तक 1.34 करोड़ स्ट्रीट लाइट्स को स्मार्ट एलईडी से रीप्लेस किया जाएगा। इससे ऊर्जा माँग में 1.5 गीगावाट की कमी आएगी। इससे ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में 6.2 मिलियन टन की कमी आएगी।
- उजाला योजना के तहत् पूरे देश में 36.13 करोड़ एलईडी बल्ब वितरित किए गए हैं इससे प्रतिवर्ष 46.92 बिलियन किलोवॉट ऊर्जा की बचत हुई है।

उजाला योजना

- योजना का मुख्य उद्देश्य कुशल प्रकाश व्यवस्था को बढ़ावा देना और कुशल उपकरणों का उपयोग करने के बारे में जागरूकता बढ़ाना, जो बिजली के बिल को कम करते हैं और पर्यावरण को संरक्षित करने में मदद करते हैं।
- इस योजना को ऊर्जा दक्षता सेवा लिमिटेड (EESL) द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, जो केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय के अधीन सार्वजनिक उपक्रमों का एक संयुक्त उद्यम है।
- UJALA सरकार की एक प्रमुख परियोजना है। जहाँ यह चाहता है कि भारत के प्रत्येक घर में एलईडी बल्बों का उपयोग किया जाये, ताकि शुद्ध बिजली या ऊर्जा खपत की दर में कमी आए और कार्बन उत्सर्जन दरों को भी जाँचा जा सके।

NetSCoFAN

PIB, [06 Jan, 2020]

संदर्भ

- केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने आहार एवं पोषण के क्षेत्र में काम करने वाले शोध एवं शिक्षा संस्थानों के एक नेटवर्क का अनावरण किया है जिसका नाम NetSCoFAN है।

क्या है?

- इस नेटवर्क में संस्थानों को आठ समूहों में बाँटा गया है, जैसे-जीव वैज्ञानिक, रासायनिक, पोषाहार एवं लेबलिंग, पशु मूल का आहार, पादप मूल का आहार, जल एवं पेय पदार्थ, भोजन परीक्षण तथा अधिक सुरक्षित एवं टिकाऊ डिब्बाबंदी।
- इन आठ समूहों के लिए FSSAI को नाभिक कार्यालय बनाया गया है जिसका काम एक ऐसा "रेडी रेकनर" बनाना होगा जिसमें सभी शोधकार्यों, विशेषज्ञों और संस्थानों की सूची होगी।
- NetSCoFAN विभिन्न क्षेत्रों में शोध की कमियों का पता लगाएगा और खाद्य सुरक्षा से संबंधित एक डेटाबेस तैयार करेगा जिससे कि जोखिम मूल्यांकन की गतिविधियाँ संचालित की जा सकें।
- केंद्र सरकार ने कई मीडिया घरानों को पहला 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मीडिया सम्मान' देने की घोषणा की।

- यह पुरस्कार 07 जनवरी 2020 को 30 मीडिया हाउस को प्रदान किया गया। इस सम्मान का उद्देश्य योग के संदेश के प्रसार में मीडिया के योगदान को रेखांकित करना है।

क्या है?

- सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने भारत और विदेश में योग के प्रचार-प्रसार में सकारात्मक भूमिका और जिम्मेदारी को मान्यता देने हेतु जून 2019 में पहले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मीडिया सम्मा न की स्थापना की थी।
- केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर ने मीडिया संस्थानों को अवार्ड देकर सम्मानित किया था।

मुख्य बिंदु

- समाचार पत्रों में योग के बारे में श्रेष्ठज मीडिया कवरेज की श्रेणी में 11 पुरस्कार दिये गये।
- टेलीविजन पर श्रेष्ठों मीडिया कवरेज की श्रेणी में आठ पुरस्कार प्रदान किये गये।
- इसके अलावा, रेडियो पर श्रेष्ठज मीडिया कवरेज की श्रेणी में 11 सम्मादन प्रदान किये गये।
- सम्मान के तहत् एक विशेष पदक, पट्टिका, ट्रॉफी और एक प्रशस्ति पत्र शामिल है।
- योग को लोकप्रिय बनाने में मीडिया के योगदान एवं प्रविष्टियों का मूल्यांकन एक न्यायपीठ द्वारा किया गया।
- इस न्यायपीठ में छह सदस्य थे तथा इसके अध्यटक्ष भारतीय प्रेस परिषद् के चेयरमैन न्या यमूर्ति सी.के.प्रसाद थे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के बारे में

- अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है क्योंकि यह दिन वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घ जीवन प्रदान करता है।यह दिवस पहली बार 21 जून 2015 को मनाया गया था। इसकी शुरुआत भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की थी।
- अंतरराष्ट्रीय योग दिवस साल 2015 से प्रतिवर्ष 21 जून को मनाया जाता है। इसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा 11 दिसंबर 2014 को मान्यता दी गई थी।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनए) के अपने संबोधन में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का विचार रखा था।

‘पूर्वोदय’ एवं एकीकृत इस्पात केन्द्र

PIB, [10 Jan, 2020]

संदर्भ

- पूर्वोत्तर राज्यों के विकास के संबंध में प्रधानमंत्री के विजन के अनुरूप इस्पात मंत्रालय ‘पूर्वोदय’ की शुरुआत करेगा।
- इसके लिए इस्पात मंत्रालय सीआईआई और जेपीसी के साथ भागीदारी कर रहा है। समेकित इस्पात केन्द्र के जरिये ‘पूर्वोदय’ के तहत देश के पूर्वी इलाकों का तेज विकास किया जाएगा।

मुख्य बिंदु

- विश्वस्तरीय इस्पारत केन्द्र बन जाने से ‘पूर्वोदय’ को बल मिलेगा और पूर्वी क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक विकास में तेजी आएगी। इस केन्द्र में अतिरिक्त इस्पा त क्षमता के लिए 70 अरब डॉलर का पूँजी निवेश करना होगा, जिससे केवल इस्पात उत्पा दन के जरिये लगभग 35 अरब डॉलर का जीएसडीपी प्राप्त होगा।
- ऐसे केन्द्र को स्थापित करने से रोजगार सृजन होगा, जिसके तहत् इस क्षेत्र में 2.5 मिलियन से अधिक रोजगार के अवसर पैदा होंगे। इसके अलावा शहरों, स्कूलों, अस्पतालों, कौशल विकास केन्द्रों आदि का भी विकास होगा।
- इन राज्यों के सर्वाधिक अविकसित क्षेत्रों में होने वाले विकास के जरिये पूर्वी भारत की सामाजिक-आर्थिक प्रगति संभव होगी। इस प्रकार पूर्व और देश के अन्य क्षेत्रों के बीच असमानता कम होगी।

पृष्ठभूमि

- ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ, पश्चिम बंगाल और उत्तरी आंध्र प्रदेश जैसे देश के पूर्वी राज्यों में लौह अयस्क लगभग 80 प्रतिशत, कोकिंग कोल 100 प्रतिशत और पर्याप्त मात्रा में क्रोमाइट, बॉक्साइट और डोलोमाइट जैसे खनिज पाये जाते हैं।
- इस क्षेत्र में पारादीप, हल्दिया, विजाग और कोलकाता जैसे बड़े बंदरगाह भी मौजूद हैं। इसके अलावा तीन प्रमुख राष्ट्रीय जलमार्ग, सड़क मार्ग और रेल मार्ग इस क्षेत्र को देश के कई इलाकों से जोड़ते हैं।
- उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय इस्पात नीति में इस्पात उत्पादन बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसके तहत् 75 प्रतिशत से अधिक की क्षमता इस क्षेत्र में मौजूद है।
- सरकार ने फैसला किया है कि अगले 5 वर्षों के दौरान 100 लाख करोड़ रुपये अवसंरचना में निवेश किया जाएगा। इसके मद्देनजर प्रधानमंत्री आवास योजना, जलजीवन मिशन, सागरमाला, भारतमाला जैसी विभिन्न योजनाओं के जरिये निर्माण तथा अवसंरचना विकास में तेजी आएगी।

एकीकृत इस्पात केन्द्र

- ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ, पश्चिम बंगाल और उत्तरी आंध्र प्रदेश में स्थापित होने वाले प्रस्तावित एकीकृत इस्पात केन्द्र के जरिये पूर्वी भारत के सामाजिक-आर्थिक को नई दिशा मिलेगी।
- इस्पात क्षमता को बढ़ाने के अलावा इस केन्द्र से मूल्य संवर्धन क्षमता में भी इजाफा होगा। समेकित इस्पात केन्द्र के 3 प्रमुख तत्त्व हैं, जिनमें ग्रीनफील्ड इस्पात संयंत्रों की स्थापना के जरिये क्षमता संवर्धन, एकीकृत इस्पात संयंत्रों के निकट इस्पात उप

GS World Committed To Excellence

केन्द्रों का विकास और उपयोगी अवसंरचना के जरिये पूर्व में सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को बदलना शामिल है।

- 12 प्रमुख इस्पृात जोनों के लिए अवसंरचना परियोजनाओं और महत्वपूर्ण लॉजिस्टिक परियोजनाओं को चिह्नित किया गया है। ये 12 प्रमुख इस्पात जोन कलिंगनगर, अंगुल, राउरकेला, झारसुगुड़ा, नगरनार, भिलाई, रायपुर, जमशेदपुर, बोकारो, दुर्गापुर, कोलकाता, विजाग में स्थित हैं।

राज्य ऊर्जा दक्षता सूचकांक 2019 जारी

PIB, [10 Jan, 2020]

संदर्भ

- केन्द्री य विद्युत, नवी और नवीकरणीय ऊर्जा एवं कौशल विकास तथा उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री राजकुमार सिंह ने राज्य ऊर्जा दक्षता सूचकांक 2019 जारी किया।
- इसका पहला सूचकांक अगस्त 1, 2018 में प्रकाशित हुआ था।

क्या है?

- इस सूचकांक को ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (Bureau of Energy Efficiency – BEE) एवं ऊर्जा सक्षम अर्थव्यवस्था संघ (AEEE)संयुक्त रूप से तैयार करते हैं।यह एक राष्ट्रीय सूचकांक है जो राज्यों की ऊर्जा विषयक नीतियों और कार्यक्रमों का आकलन करता है।
- यह प्रतिवेदन देश के 36 राज्यों/संघीय क्षेत्रों में ऊर्जा दक्षता के क्षेत्र में हुई प्रगति का आकलन 97 महत्त्वपूर्ण संकेतकों के आधार पर करता है।
- विवेक सम्मत तुलना के लिए राज्यों और संघीय क्षेत्रों को चार समूहों में विभक्त कर दिया गया है। इस विभाजन का आधार यह है कि किस राज्य या संघीय क्षेत्र ने बिजली की माँग के लिए अपेक्षित कितनी सम्पूर्ण प्राथमिक ऊर्जा आपूर्ति (Total Primary Energy Supply – TPES) की है।
- इसको इस प्रकार कह सकते हैं कि इन्होंने बिजली, कोयला, खनिज तेल, गैस आदि के लिए कितनी ऊर्जा मुहैया की है।

उद्देश्य

- इस सूचकांक से राष्ट्रीय ऊर्जा दक्षता के लिए राज्यों में किये जाने वाले प्रयासों को लागू करने में सहायता मिलेगी, साथ ही ऊर्जा सुरक्षा (energy security), ऊर्जा उपलब्ध ता (energy access) एवं जलवायु परिवर्तन (climate change) के राज्यस्तरीय तथा राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।
- स्वतंत्र संकेतकों में मुख्य हैं-भवन निर्माण, उद्योग, नगरपालिका, परिवहन, कृषि तथा ऊर्जा वितरण कंपनियाँ।
- यह सूचकांक राज्यों की नीतियों एवं नियमों, वित्तीय तंत्रों, संस्थागत क्षमता, ऊर्जा बचाने वाले उपायों तथा बचाई गई ऊर्जा का अध्ययन करता है।

सूचकांक में वर्णित श्रेणियाँ

- सूचकांक में राज्यों को उपलब्धि के आधार पर उन्हें कुछ श्रेणियाँ दी जाती हैं, जैसे-अग्रणी, सफल, प्रतियोगी,आकांक्षी

विभिन्न राज्यों का प्रदर्शन

- इस वर्ष किसी भी राज्य को अग्रणी का स्थान नहीं दी गई है।
- सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वलेर राज्य कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और पुडुचेरी है।
- सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले राज्य हैं – मणिपुर, झारखंड, राजस्थान और जम्मू-कश्मीर।

भारत तथा बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन के बीच समझौता ज्ञापन को मंजूरी

PIB, [06 Jan, 2020]

संदर्भ

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय तथा बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन के बीच समझौता ज्ञापन को पूर्व प्रभाव से मंजूरी दे दी है।
- इस समझौता ज्ञापन पर बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन के न्यासी और सह अध्यक्ष श्री बिल गेट्स की भारत यात्रा के दौरान नवंबर 2019 में हस्ताक्षर किए गए थे।

समझौता ज्ञापन के तहत् निम्नलिखित क्षेत्रों में सहयोग की व्यावस्थाथ की गई है:-

- माताओं, नवजात शिशुओं तथा बच्चों की मृत्यु दर में कमी लाने और पोषण सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए टीकाकरण तथा गुणवत्ता युक्त प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं की सभी तक पहुँच को आसान और सुगम बनाना।
- परिवार नियोजन के तौर तरीकों और गुणवत्ता वाले विकल्प बढ़ाना। विशेष रूप से युवा महिलाओं तक ऐसे विकल्प उपलब्ध कराना जिन्हें आसानी से बदला जा सके।
- टीबी और वीएल और एलएफ जैसे संक्रामक रोगों के मामलों में कमी लाना।
- आवंटित बजट के इस्तेमाल के साथ स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यरत मानव संसाधन के कौशल और प्रबंधन, मजबूत आपूर्ति श्रृंखला और निगरानी तंत्र के माध्यम से स्वाकस्य्का प्रणाली को सशक्तर बनाना।

'सक्षम' अभियान

PIB, [15 Jan, 2020]

संदर्भ

- केन्द्रीय पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अधीन पेट्रोलियम संरक्षण अनुसन्धान संघ (PCRA) देश में तेल व गैस के संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए 'सक्षम' अभियान की शुरुआत 16 जनवरी को करेगा। इसका मुख्य उद्देश्य ईंधन संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाना है।

क्या है?

- 'सक्षम' अभियान की शुरुआत पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अधीन पेट्रोलियम संरक्षण अनुसन्धान संघ (PCRA) द्वारा की जायेगी।
- इसका उद्देश्य लोगों को स्वास्थ्य तथा पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से पेट्रोलियम उत्पादों के समुचित उपयोग के लिए जागरूक करना है।
- इस अभियान के द्वारा 'पोल्यूशन का सोल्यूशन' का सन्देश दिया जाएगा।
- PCRA ने NCERT के साथ मिलकर 'ईंधन संरक्षण' की थीम पर एक कॉमिक बुक भी तैयार की है। इस अभियान के दौरान इस कॉमिक बुक का वितरण किया जाएगा। यह पुस्तक ई-पाठशाला पर भी उपलब्ध है।

पेट्रोलियम संरक्षण अनुसन्धान संघ (PRCA)

- पेट्रोलियम संरक्षण अनुसन्धान संघ (PRCA) एक गैर-लाभकारी संगठन है, इसका पंजीकरण केन्द्रीय पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अधीन किया गया है।
- PCRA देश में ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख राष्ट्रीय सरकारी एजेंसी है। यह रेडियो, दूरदर्शन, टीवी चैनल इत्यादि के द्वारा ऊर्जा संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने का कार्य करता है।

जीसैट-30 का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण

PIB, [17 Jan, 2020]

संदर्भ

- हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)ने यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी से एरियन-5 प्रक्षेपण यान के माध्यम से संचार उपग्रह जीसैट-30 प्रक्षेपित कर दिया है।
- यह प्रक्षेपण भारतीय समयानुसार 02 बजकर 35 मिनट पर किया गया। यह इसरो का इस साल अर्थात 2020 का पहला मिशन है। लॉन्च के लगभग 38 मिनट 25 सेकंड बाद सैटेलाइट कक्षा में स्थापित हो गया।
- जीसैट-30 इनसैट-4ए की जगह लेगा तथा उसकी कवरेज क्षमता अधिक होगी। इनसैट-4ए को साल 2005 में लॉन्च किया गया था।
- यह उपग्रह केयू बैंड में भारतीय मुख्य भूमि एवं द्वीपों को, सी बैंड में खाड़ी देशों, बड़ी संख्या में एशियाई देशों तथा आस्ट्रेलिया को कवरेज प्रदान करता है।
- यह भारत का 24वां ऐसा सैटलाइट है, जिसे एरियनस्पेस के एरियन रॉकेट से प्रक्षेपित किया गया है।
- वर्तमान में इसरो के पास आदित्य-एल1 उपग्रह सहित 25 उपग्रह लॉन्च करने की योजना है। आदित्य एल1 मिशन को मध्य 2020 तक लॉन्च करने की योजना है।
- यह मिशन पृथ्वी पर जलवायु परिवर्तन को समझने तथा भविष्यवाणी करने में अहम भूमिका निभा सकता है। इसरो ने पिछले साल छह लॉन्च वाहन और सात उपग्रह मिशन लॉन्च किए थे।

जीसैट-30 क्या है?

- जीसैट-30 जीसैट सीरीज का बेहद ताकतवर और महत्त्वपूर्ण संचार उपग्रह है। इस उपग्रह की मदद से देश की संचार प्रणाली में और इजाफा होगा।
- अभी जीसैट सीरीज के 14 सैटेलाइट काम कर रहे हैं। इस सैटेलाइट की बदौलत ही देश में संचार व्यवस्था कायम है।
- ये देश का अब तक का सबसे ताकतवर संचार उपग्रह भी है। जीसैट -30 को पूरी तरह से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने ही डिजाइन किया है।

महत्त्व

- जीसैट-30 की सहायता से देश की संचार प्रणाली, टेलीविजन प्रसारण, सैटेलाइट के जरिए समाचार प्रबंधन, समाज हेतु काम आने वाली भूआकाशीय सुविधाओं, मौसम संबंधी जानकारी और भविष्यवाणी, आपदाओं की पूर्व सूचना और खोजबीन तथा रेस्क्यू ऑपरेशन में इजाफा होगा।
- इस उपग्रह के लॉन्च होने के बाद देश की संचार व्यवस्था और मजबूत हो जाएगी। इसकी सहायता से देश में नई इंटरनेट टेक्नोलॉजी लाई जाने की उम्मीद है।

आवश्यकता क्यों?

- देश का पुराना संचार उपग्रह 'इनसैट सैटेलाइट' की उम्र अब पूरी हो रही है। देश में इंटरनेट की नई-नई टेक्नोलॉजी आ रही है। ऑप्टिकल फाइबर बिछाए जा रहे हैं।
- 5G तकनीक पर काम चल रहा है। इस वजह से ज्यादा ताकतवर सैटेलाइट की जरूरत थी। जीसैट-30 सैटेलाइट इन्हीं आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

जीसैट-30 कब तक काम करेगा?

- जीसैट-30 लॉन्च होने के बाद 15 सालों तक पृथ्वी के ऊपर भारत हेतु काम करता रहेगा।
- इसे जियो-इलिप्टिकल ऑर्बिट में स्थापित किया जाएगा। इसमें दो सोलर पैनल होंगे तथा बैटरी होगी जो इसे ऊर्जा प्रदान करेगी।

ब्रु-रियांग शरणार्थी समझौता

PIB, [16 Jan, 2020]

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में लंबे समय से चली आ रही ब्रु समुदाय की समस्या का हल करने के लिए केंद्र सरकार ने ऐलान किया है कि ब्रु समुदाय के लोग अब स्थायी रूप से त्रिपुरा में बसेंगे।
- 16 जनवरी को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और ब्रु शरणार्थियों के प्रतिनिधियों ने त्रिपुरा के सीएम बिप्लब कुमार देब और मिजोरम के मुख्यमंत्री जोरमथंगा की उपस्थिति में मिजोरम से ब्रु शरणार्थियों के संकट को समाप्त करने और त्रिपुरा में अपने निपटान के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किया गया।

समझौते की मुख्य विशेषताएँ

- इस समझौते के तहत् त्रिपुरा में लगभग 30,000 ब्रु शरणार्थियों को बसाया जाएगा, इसके लिए 600 करोड़ रुपये का पैकेज दिया गया है।
- समझौते के अनुसार ब्रु जनजातियों को त्रिपुरा में निवास करने के लिए जमीन दी जाएगी।
- प्रत्येक परिवार को सरकारी सहायता की राशि के रूप में 4 लाख रुपये की सावधि जमा दी जाएगी। वे दो साल बाद इस राशि को निकाल सकेंगे।
- प्रत्येक विस्थापित परिवारों को 40 × 30 वर्ग फुट का आवासीय भूखंड दिया जाएगा।
- उनके अलावा, प्रत्येक परिवार को दो साल के लिए प्रति माह 5,000 नकद दिया जाएगा।
- समझौते पर प्रकाश डाला गया है कि प्रत्येक विस्थापित परिवार को दो साल के लिए मुफ्त राशन और रुपये की सहायता दी जाएगी। साथ ही 1.5 लाख रुपए अपने घर बनाने के लिए दिए जाएंगे।
- यह समझौता त्रिपुरा में हजारों ब्रु-रियांग लोगों के पुनर्वास के लिए एक स्थायी समाधान लाएगा।
- सरकार का मानना है कि यह समझौता उनके उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करेगा। ब्रु-रियांग जनजाति सरकार की सभी सामाजिक-कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठा सकेंगे।

कौन है ब्रु जनजाति?

- ब्रु शरणार्थी कहीं बाहर के नहीं बल्कि अपने ही देश के शरण ार्थी हैं। जिन्हें ब्रु (रियांग) जनजाति भी कहते हैं।
- ब्रू समुदाय मिजोरम का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक आदिवासी समूह है। इस जनजातीय समूह के सदस्य म्यांमार के शान प्रांत के पहाड़ी इलाके के मूल निवासी हैं, जो कुछ कुछ सदियों पहले म्यांमार से आकर मिजोरम में बसे थे।
- गृह मंत्रालय ने चेंचू, बोडो, गरबा, असुर, कोतवाल, बैगा, बोंदो, मारम नागा, सौरा जैसे जिन 75 जनजातीय समूहों को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) के रूप में वर्गीकृत किया है, रियांग उनमें से एक हैं।
- त्रिपुरा और मिजोरम के अलावा इस जनजाति के सदस्य असम और मणिपुर में भी रहते हैं।
- इनकी बोली रियांग है जो तिब्बत-म्यांमार की कोकबोरोक भाषा परिवार का अंग है। रियांग बोली में 'ब्रु' का अर्थ 'मानव' होता है।
- त्रिपुरी के बाद यह त्रिपुरा की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है। रियांग जनजाति मुख्यत: दो बड़े गुटों में विभाजित है-मेस्का और मोलसोई।
- यह मुख्यत: कृषि पर निर्भर रहने वाली जनजाति है। ये पहले झूम की खेती करते थे।

पृष्ठभूमि

- मिजोरम में मिजो जनजातियों का कब्जा बनाए रखने के लिए मिजो उग्रवाद ने कई जनजातियों को निशाना बनाया और इनके अनुसार ब्रु समुदाय 'बाहरी' है।
- 1996 में ब्रु समुदाय और बहुसंख्यक मिजो समुदाय से स्वायत्त जिला परिषद् के मुद्दे पर खूनी संघर्ष हुआ। तब अक्तूबर 1997 में ब्रु जनजाति की करीब आधी आबादी (लगभग पांच हजार परिवारों) ने पलायन कर त्रिपुरा में शरण ले ली थी।
- इससे पहले 2018 में इन्हें वापस भेजने के लिए एक समझौता हुआ था लेकिन वह लागू नहीं हो सका।

जैड-मोड टनल

PIB, [17 Jan, 2020]

संदर्भ

- हाल ही में जम्मू-कश्मीर में 6.5 किलोमीटर लंबी जैड-मोड सुरंग को पूरा करने के लिए एक रियायत समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।
- केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग और एमएसएमई मंत्री नितिन गडकरी की मौजूदगी में हुआ यह समझौता महज एक प्रपत्र नहीं बल्कि जम्मू-कश्मीर की अर्थव्यवस्था और वहाँ के लोगों के जीवन को सुगम बनाने की एक पहल है जो साढ़े तीन सालों में साकार रूप लेगी।
- यह टनल 2023 तक बनकर तैयार हो जाएगी, जिससे श्रीनगर से सोनमर्ग का रास्ता सुगम हो जाएगा, यानी बर्फ के चलते जो रास्ता सर्दियों में बीच-बीच में बंद करना पड़ता है, वह बारह महीने खुला रहेगा।

मुख्य बिंदु

- श्रीनगर-सोनमर्ग-गुमरी रोड पर गंगागिर और सोनमर्ग के बीच एनएच -1 पर इसका निर्माण हो रहा है।

- दोनों दिशाओं में बनी दो लेन वाली सुरंग में समानांतर निकास है।
- इस सुरंग को बनाने में 2378.72 करोड़ रुपये की लागत आएगी।
- सुरंग का निर्माण कार्य 3.5 वर्षों में पूरा कर दिया जाएगा।
- यह टनल 6.5 लंबी होगी और इसकी चौड़ाई 10 मीटर होगी।
- इस टनल में अधिकतम गति 80 किमी/घंटा होगी।
- एक घंटे में इससे 1000 वाहन गुजर सकेंगे।
- यह सुरंग समुद्र की सतह से 2,637 मीटर यानी 8,652 फीट की ऊँचाई पर होगी।

विंग्स इंडिया 2020

PIB, [18 Jan, 2020]

संदर्भ

- विंग्स इंडिया 2020 भारतीय नागरिक उड्डयन उद्योग की एक प्रमुख घटना है, जो 12 से 15 मार्च, 2020 तक बेगमपेट हवाई अड्डे, हैदराबाद में आयोजित की जाएगी।
- विंग्स इंडिया 2020 नागरिक उड्डयन क्षेत्र पर एक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी और सम्मेलन है।
- हैदराबाद एविएशन का हब होने के नाते इस आयोजन का स्वाभाविक मेजबान भी है।
- इसका आयोजन नागरिक उड्डयन मंत्रालय, भारत सरकार, एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया (AAI) और फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (FICCI) द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा।
- वर्ष 2020 का विषय 'फ्लाइंग फॉर ऑल' है और नागरिक उड्डयन उद्योग में नए व्यापार अधिग्रहण, निवेश, नीति निर्माण और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- यह विमानन उद्योग में एशिया की सबसे बड़ी और सबसे लोकप्रिय सभा होगी।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

- यह संसद के एक अधिनियम द्वारा गठित किया गया था और 1 अप्रैल 1995 को भारतीय राष्ट्रीय विमानपत्तन प्राधिकरण और अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकरण के विलय के द्वारा अस्तित्व में आया था।
- इसे देश में जमीन और वायु अंतरिक्ष दोनों पर नागरिक उड्डयन बुनियादी ढाँचे के निर्माण, उन्नयन, रखरखाव और प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

भारतीय वाणिज्य और उद्योग महासंघ

- इसे 1927 में स्थापित किया गया था और यह भारत में सबसे बड़ा और सबसे पुराना सर्वोच्च व्यापारिक संगठन है।
- यह एक गैर-सरकारी संगठन है, न कि लाभ के लिए संगठन।
- यह नेटवर्किंग और सर्वसम्मति के निर्माण के लिए एक मंच प्रदान करता है जो कि सेक्टरों के भीतर और आसपास है और भारतीय उद्योग, नीति निर्माताओं और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समुदाय के लिए पहला स्थान है।

एनआईसी टेक-कांक्लेव 2020

PIB, [20 Jan, 2020]

संदर्भ

- हाल ही में विधि एवं न्याय, संचार और इलेक्ट्रानिक्स व सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद दूसरी 'एनआईसी टेक-कांक्लेव 2020' का उद्घाटन किया।
- इस दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) प्रवासी भारतीय केंद्र, चाणक्य पुरी, नई दिल्ली में हुआ।

थीम

- एनआईसी टेककॉन्क्लेव 2020 का विषय (Technologies for Next & Gen Governance) नेक्स्टजेन गवर्नेंस के लिए टेक्नोलॉजीज है।

मुख्य विशेषताएँ

- सम्मेलन सरकार में विभिन्न स्तरों पर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के स्टीयरिंग अनुप्रयोग पर चर्चा हुई।
- कॉन्क्लेव पूरे देश में सरकारी अधिकारियों के क्षमता निर्माण में बहुत योगदान देगा और उच्च-गुणवत्ता वाली नागरिक-केंद्रित सेवाएँ प्रदान करने में मदद करेगा।

प्रतिभागियों

- कॉन्क्लेव में वक्ता आईटी उद्योग के विशेषज्ञ थे जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों जैसे साइबर सुरक्षा, डिजाइन थिंकिंग, हाइपरस्केल आर्किटेक्चर, आदि में अपनी विशेषज्ञता साझा किया।

भारत, टयूनीशिया एवं पापुआ न्यू गिनी के निर्वाचन आयोगों के बीच समझौता

PIB, [22 Jan, 2020]

संदर्भ

- हाल ही में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने निर्वाचन प्रबंधन एवं प्रशासन के क्षेत्र में सहयोग के लिए ट्यूनीशिया के स्व तंत्र निर्वाचन प्राधिकरण (आईएसआईई) तथा पापुआ न्यू गिनी निर्वाचन आयोग (पीएनजीईसी) के साथ समझौतों के लिए निर्वाचन आयोग को अनुमति देने हेतु विधायी विभाग के प्रस्ता व के लिए अपनी मंजूरी दे दी है।

प्रभाव

- इस समझौता ज्ञापन से निर्वाचन प्रबंधन एवं प्रशासन के क्षेत्र में सहयोग के लिए ट्यूनीशिया स्वतंत्र निर्वाचन उच्चा प्राधिकरण (आईएसआईई) तथा पापुआ न्यू गिनी निर्वाचन आयोग (पीएनजीईसी) के लिए तकनीकी सहायता/क्षमता समर्थन तैयार करने के उद्देश्य से द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।
- साथ ही, निर्वाचन प्रबंधन तथा प्रशासन के क्षेत्र में सहयोग बढ़ेगा और संबंधित देशों में निर्वाचन के संचालन में ऐसी संस्थाओं को बल मिलेगा। इसके परिणामस्वरूप भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंध मजबूत होंगे।

मुख्य बिंदु

- इन समझौतों में मानदंड आधारित अनुच्छेद/उपखंड शामिल हैं, जिनमें निर्वाचन प्रक्रिया के संगठनात्मक एवं तकनीकी विकास के क्षेत्र में ज्ञान एवं अनुभव को साझा करने, सूचना के आदान-प्रदान में सहायता देने, संस्थाओं को सशक्त बनाने तथा क्षमता निर्माण करने, कार्मिकों को प्रशिक्षित करने एवं नियमित परामर्श आयोजित करने आदि सहित, निर्वाचन प्रबंधन एवं प्रशासन के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए व्यापक तौर पर उल्लेख किया गया है।

पृष्ठ भूमि

- निर्वाचन आयोग संबंधित पक्षों द्वारा समझौते पर हस्ताक्षर द्वारा विश्व भर के कुछ देशों तथा एजेंसियों के साथ निर्वाचन से जुड़े मामलों तथा निर्वाचन प्रक्रियाओं में सहयोग को बढ़ावा देने में अपनी भागीदारी करता रहा है।
- निर्वाचन आयोग एक संवैधानिक संस्था है, जो विश्व में सबसे बड़े निर्वाचन अभियान का संचालन करता है। विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि वाले लगभग 85 करोड़ मतदाताओं वाले देश में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव आयोजित करना निर्वाचन आयोग का उत्तरदायित्व है।

नेशनल डेटा एंड एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म

PIB, [23 Jan, 2020]

संदर्भ

- हाल ही में नीति आयोग ने आज नेशनल डेटा एंड एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म (एनडीएपी) के लिए अपना विजन जारी किया।
- इस प्लेटफॉर्म का उद्देश्य सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सरकारी डेटा तक पहुँच को सर्वसुलभ कराना है।
- इस प्लेटफॉर्म पर विभिन्न सरकारी वेबसाइटों के नवीनतम डेटा सेट उपलब्ध कराये जायेंगे।
- यह प्लेटफॉर्म इन सभी डेटा सेट को सुसंगत ढंग से प्रस्तुत करेगा तथा इसके साथ ही विश्लेषण एवं संकल्पना के लिए आवश्यक साधन उपलब्ध कराएगा।

मुख्य बिंदु

- एनडीएपी ऐसे विभिन्न प्रारूपों (फॉर्मेट) के मानकीकरण का मार्ग प्रशस्त करेगा, जिनमें समस्त सेक्टरों में डेटा प्रस्तुत किया जाता है।
- यह नीति निर्माताओं, अनुसंधानकर्ताओं, अन्वेषकों, डेटा वैज्ञानिकों, पत्रकारों एवं नागरिकों की जरूरतों को पूरा करेगा।
- मंच की प्रगति एक अंतर-मंत्रालयी समिति द्वारा की जानी है। मंच को 2021 में लॉन्च किया जाना है।
- एक तकनीकी सलाहकार समूह (टीएजी) भी क्षेत्र में विशेषज्ञों के साथ स्थापित किया जाएगा, जो मंच के विकास और प्रबंधन में मार्गदर्शन करते हैं।
- कई क्षेत्रों से, प्लेटफॉर्म एक स्थान पर डेटा तक पहुँच प्रदान करेगा, जो कि मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) के माध्यम से अप-टू-डेट होगा और इसमें सहज नेविगेशन द्वारा समर्थित एक विश्व स्तरीय उपयोगकर्ता इंटरफेस होगा।

कोरोना वायरस?

PIB, [27 Jan, 2020]

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में नोवल कोरोना वायरस का प्रकोप चीन में चल रहा है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अन्य देशों से भी कई मामले सामने आए हैं। इसके अलावा, भारत में नोवल कोरोना वायरस का मामला केरल में सामने आया है।
- कोरोना वायरस बीमारी के लक्षण सामान्य सर्दी-जुकाम से लेकर गंभीर बीमारियों जैसे मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (एमईआरएस-सीओवी और सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (सार्स-सीओवी) जैसे हैं।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कोरोना वायरस को अंतरराष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति घोषित कर दिया है,क्योंकि इसका प्रकोप चीन के बाहर भी जारी है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के अनुसार, यह वायरस सी-फूड से जुड़ा है।

क्या है?

- कोरोना वायरस (CoV) निडोवायरस के परिवार से संबंधित है जो सामान्य सर्दी से लेकर गंभीर बीमारियों जैसे मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (MERS & CoV) और गंभीर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (SARS & CoV) काकारण बनता है।
- कोरोना वायरस जूनोटिक (zoonotic) है, जिसका अर्थ है कि ये जानवरों और लोगों के बीच संचारित होते हैं।
- इस वायरस स्पाइकी (Spiky) इलेक्ट्रॉन को माइक्रोस्कोप में देखने पर सौर कोरोना जैसे दिखते हैं। इसे 2019-CoVनाम दिया गया है।

- मानवीय कोरोना वायरस के प्रकार है- 229E, NL63, OC43 और HKU1 ,MERS & CoV, SARS & CoV, जो आम तौर पर एक सामान्य सर्दी की तरह हल्के से मध्यम श्वसन तंत्र की बीमारी का कारण बनते हैं।
- मानवीय कोरोना वायरस अधिकांशत: किसी संक्रमित मनुष्य से दूसरे मनुष्य में निम्नलिखित माध्यमों से संचरित होता है, जैसे -खाँसी और छींक, निकट सम्पर्क जैसे स्पर्श या हाथ मिलाना, वायरस युक्त वस्तु अथवा सतह को छूना एवं हाथ धोये बिना अपना मुँह, नाक और आँखों को छूना।

गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम (Severe Acute Respiratory Syndrome-SARS)

- यह मनुष्यों में वायरल श्वसन रोग है, जो कि सार्स कोरोना वाइरस (सार्स-कोव) के कारण होता है। यह गंभीर, निमोनिया का प्राणघातक प्रकार है।
- सार्स, वर्ष 2002 में दक्षिणी चीन के गुआंग्डोंग प्रांत में उत्पन्न हुआ था। यह संक्रमण तेजी से अन्य देशों में (महामारी) फैल गया था।
- अंतत: इस रोग को नियंत्रण में लाने से पहले 8,000 से अधिक मामलें पाए गए एवं 774 मौतें हुई थी।

वैश्विक आलू सम्मेलन

PIB, [28 Jan, 2020]

संदर्भ

- हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के गांधी नगर में आयोजित तीसरे वैश्विक आलू सम्मेलन को संबोधित किया।
- इससे पहले दो वैश्विक आलू सम्मेलनों का आयोजन 1999 और 2008 में किया गया था।
- इस सम्मेलन का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, आईसीएआर-केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला और पेरू के लिमा में स्थित अंतर्राष्ट्रीय आलू केन्द्र (सीआईपी) के सहयोग से भारतीय आलू संघ द्वारा किया जा रहा है।

पृष्ठभूमि

- तीसरा वैश्विक आलू सम्मेलन सभी हितधारकों को एक साझा मंच पर लाने का अवसर प्रदान करेगा ताकि सभी मुद्दों पर चर्चा की जाए और आलू क्षेत्र से संबंधित सभी लोगों को शामिल करते हुए भविष्य की योजनाएं बनाई जाए।
- इसमें आलू अनुसंधान में जानकारी और नवाचारों के मोर्चे पर देश के विभिन्न हितधारकों को अपनी क्षमता उजागर करने का मौका मिलेगा। इस सम्मेलन के तीन प्रमुख घटक (i) आलू सम्मेलन, (ii) कृषि प्रदर्शनी और (iii) आलू फील्ड डे हैं।
- आलू सम्मेलन 28-30 जनवरी, 2020 के दौरान 3 दिनों के लिए आयोजित किया गया।
- इसमें 10 विषय होंगे, जिनमें से 8 विषय बुनियादी और अनुप्रयुक्त अनुसंधान पर आधारित हैं। शेष दो विषयों आलू व्यापार और मूल्य श्रृंखला प्रबंधन एवं नीतिगत मुद्दों पर विशेष जोर दिया गया।
- कृषि प्रदर्शनी का आयोजन 28 से 30 जनवरी, 2020 तक किया जाएगा जिसमें आलू आधारित उद्योगों और व्यापार, प्रसंस्करण, बीज आलू उत्पादन, जैव प्रौद्योगिकी, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में सार्वजनिक-निजी साझेदारी और किसानों से संबंधित उत्पादों आदि की स्थिति दर्शायी गयी।
- आलू फील्ड डे का आयोजन 31 जनवरी, 2020 को किया गया। इसमें आलू मशीनीकरण, आलू की किस्में और नवीनतम प्रौद्योगिकियों में प्रगति का प्रदर्शन शामिल था।

बोडो शांति समझौता 2020

PIB, [27 Jan, 2020]

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में गृह मंत्रालय (MHA), असम सरकार और बोडो समूहों (नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड एवं ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनियन) ने असम में बोडोलैंड टेरिटोरियल एरिया डिस्ट्रिक्ट (BTAD) को फिर से बनाने और इसका नाम बदलने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- वर्तमान में बोडोलैंड टेरिटोरियल एरिया डिस्ट्रिक्ट चार जिलों - कोकराझार, चिरांग, बक्सा और उदलगुरी में फैला हुआ है। नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड पर प्रतिबंध 2019 में पाँच साल के लिए बढ़ा दिया गया था।
- इस समझौते के साथ ही लगभग 50 साल से चला रहा बोडोलैंड विवाद समाप्त हो गया।

क्या हुआ समझौता?

- समझौते के अनुसार, वर्तमान में BTAD से बाहर के बोडो के प्रभुत्व वाले गाँवों को शामिल किया जाएगा और गैर-बोडो आबादी वाले लोगों को बाहर रखा जाएगा।
- इसके अलावा, पहाड़ियों में रहने वाले बोडो को अनुसूचित पहाड़ी जनजाति का दर्जा दिया जाएगा।
- इस गुट के सदस्यों को आर्थिक सहायता भी सरकार की ओर से मुहैया करवाई जाएगी और असम की एकता बरकरार रहेगी तथा उसकी सीमाओं में कोई बदलाव नहीं होगा।
- बोडो आंदोलन के दौरान मारे गए लोगों के प्रत्येक परिवारों को 5 लाख रुपए दिए जायेंगे, साथ ही केंद्र द्वारा बोडो क्षेत्रों के विकास के लिए विशिष्ट परियोजनाओं के लिए 1500 करोड़ रुपये का एक विशेष विकास पैकेज दिया जाएगा।

पृष्ठभूमि

- ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनियन (ABSU) के नेतृत्व में कई बोडो समूह 1972 से जातीय समुदाय के लिए एक अलग भूमि की माँग कर रहे हैं। यह एक ऐसा आंदोलन है जिसमें लगभग 4,000 लोगों ने अपनी जान गवाई है।
- 1993 में ABSU के साथ पहले बोडो समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे, जिससे सीमित राजनीतिक शक्तियों के साथ एक बोडोलैंड स्वायत्त परिषद का निर्माण हुआ था।
- भारत सरकार और चरमपंथी समूह बोडो लिबरेशन टाइगर्स (BLT) के बीच साल 2003 में दूसरे बोडो समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- बोडोलैंड प्रादेशिक परिषद (BTC) 2003 में कुछ वित्तीय और अन्य शक्तियों के साथ बनाया गया था।
- BTAD और संविधान की छठी अनुसूची के तहत् उल्लिखित अन्य क्षेत्रों को नागरिकता (संशोधन) अधिनियम, 2019 से छूट दी गई है।

क्या है बोडो विवाद?

- बोडो ब्रह्मपुत्र घाटी के उत्तरी हिस्से में बसी असम की सबसे बड़ी जनजाति है। ये साल 1960 से अपने लिए अलग राज्य की माँग करते आए हैं।
- बोडो का कहना है कि उनकी जमीन पर दूसरे समुदायों की अनाधिकृत मौजूदगी बढ़ती जा रही है जिससे उनकी आजीविका एवं पहचान को खतरा है।

साल 1980 के बाद बोडो आंदोलन हिंसक होने के साथ तीन धाराओं में बँट गया था:-

- नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड (एनडीएफबी) ने पहली धारा का नेतृत्व किया जो अपने लिए अलग राज्य चाहता था।
- दूसरा संगठन बोडोलैंड टाइगर्स फोर्स (बीटीएफ) है जिसने ज्यादा स्वायत्तता की माँग की।
- तीसरा ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनियन (एबीएसयू) था जिसने समस्या के राजनीतिक समाधान की माँग की।

❑❑❑

GS World
Committed To Excellence

GS World

All Programme

01 **Everyday**

प्रतिदिन प्रत्येक कक्षा के पूर्व 10 बहुविकल्पीय प्रश्नों का टेस्ट

02 **Everyday**

प्रत्येक कक्षा के पूर्व 10 मिनट का Writing Skill Development Program.

03 **Everyday**

अंग्रेजी समाचार पत्रों (Hindu,TOI, BS, ET, LM) का संभावित प्रश्नों के साथ अनुवादित आलेख

04 **Every Sunday**

Current Affairs की कक्षा के पूर्व समाचार पत्रों के आलेख पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों एवं लिखित प्रश्नों का टेस्ट

05 **Everyday**

Prelims Capsule, Short News & PIB Picture

06 **Every Saturday and Sunday**

3-3 घंटे की Current Affairs की कक्षाएं एवं अद्यतन नोट्स

07 **Half Monthly**

समाचार पत्रों एवं पीआईबी के महत्वपूर्ण आलेख (संभावित प्रश्नों के साथ)

08 **Every Sunday**

IAS एवं State PCS के लिए प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा पर आधारित टेस्ट सीरिज

09 **Every Thursday**

निबंध लेखन में सुधार के लिए प्रत्येक गुरूवार को - 'Essay of The Week'

10 **Every Saturday**

NCERT आधारित बहुविकल्पीय एवं लिखित प्रश्नों का टेस्ट

11 **Every Month**

योजना, कुरूक्षेत्र, राज्यसभा, लोकसभा टीवी डिबेट, वर्ल्ड फोकस, ईपीडब्ल्यू आदि पर आधारित लिखित टेस्ट

12 **Every Month**

प्रत्येक माह में एक बार दो प्रश्नों का निबंध टेस्ट (250 अंक)

13 **Every Tuesday & Friday**

संपादकीय सारांश- चर्चा में रहे महत्वपूर्ण टॉपिक पर आधारित ऑडियो आर्टिकल

14 **Everyday**

You Tube - Daily Update Video
GS World IAS Institute

15 **Everyday**

Basic NCERT Class

ये तस्वीरें महज छात्रों की संख्या को नहीं, बल्कि हमारे संस्थान पर उनके विश्वास को दर्शाती हैं...

Batch : 11:30 AM

Batch : 11:45 AM

Batch : 3:00 PM

Batch : 6:30 PM

हेमंत सती
(IAS)

GS World संस्थान न केवल भावी आईएएस का निर्माण करता है, बल्कि यह एक छात्र के व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायता करता है। सबसे बढ़कर इस संस्थान के गुरूजनों का व्यक्तिगत मार्गदर्शन नि:संदेह बेजोड़ है, जो अन्य कहीं उपलब्ध नहीं होता। इन मानकों पर देखें तो **GS World** सर्वश्रेष्ठ विकल्प है, क्योंकि पूरे भारत में सबसे बेहतर अध्यापकों की टीम संस्थान से जुड़ी हुई है। मैं एक बार पुन: जीएस वर्ल्ड की पूरी सहयोगी टीम को धन्यवाद देता हूं।

अतुल शर्मा
(IPS-UP Cadre)

GS World संस्थान के पास अनुभवी शिक्षक मंडल जिसमें प्रो. पुष्पेश पंत, मणिकांत सिंह, आलोक रंजन सर जैसे भारत के सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक मौजूद हैं। अनुभवी शिक्षकों के साथ-साथ बेहतर कक्षा कार्यक्रम, लेखन शैली पर विशेष ध्यान, उत्तर-पुस्तिका का अच्छी तरह से मूल्यांकन, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए समय-समय पर आयोजित परिचर्चाएं **GS World** संस्थान को सिविल सेवा अभ्यर्थियों के लिए सर्वश्रेष्ठ विकल्प बनाता है।

अजय साहनी
(IPS-UP Cadre)

एक विद्यार्थी के लिए सिविल सेवा में अंतिम सफलता पाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तीन चीजें होती हैं- बेहतर अध्ययन सामग्री, अनुभवी शिक्षक एवं प्रबंधन का नजरिया विद्यार्थियों के हितोनुरूप हो। जब मैं **GS World** संस्थान को देखता हूँ तो इस बात से आश्वस्त हो जाता हूँ कि यहाँ पर एक अभ्यर्थी सिविल सेवा की संपूर्ण तैयारी कर सकता है। निजी तौर पर संस्थान के निदेशक नीरज सिंह के प्रशासनिक अनुभव से मैं भलीभांति परिचित हूँ। मेरे अनुसार **GS World** संस्थान एक अभ्यर्थी के लिए बेहतर विकल्प हो सकता है।

धवल जायसवाल
(IPS-UP Cadre)

सफलता के लिए पढ़ने की सही रणनीति उतनी ही जरूरी है जितनी अध्ययन सामग्री और **GS World** एक ऐसा संस्थान है जहां पर अभ्यर्थी अध्ययन सामग्री के साथ-साथ उसे किस प्रकार जल्दी और अच्छे ढंग से पढ़े इसकी रणनीति भी सीखता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, संस्थान द्वारा तैयार की गई NCERT पुस्तकों की अध्यायवार रणनीति। इसके अलावा **GS World** संस्थान को जो बात सबसे अलग बनाती है वह है विद्यार्थियों को मिलने वाला व्यक्तिगत मार्गदर्शन। इस प्रकार मेरा व्यक्तिगत अनुभव यही कहता है कि **GS World** सिविल सेवा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के लिए पूर्णत: समर्पित संस्थान है।

GS World की Online Class एवं Online Test-Series के लिए अपने Mobile के Play Store से "GS World IAS Institute" App Install करें...

9654349902

घर बैठे प्रतिदिन सामान्य अध्ययन के नए वीडियो प्राप्त करने के लिए QR Code स्कैन कर के हमारे You tube चैनल (GS World IAS Institute) से जुड़ें और प्रतिदिन नए अपडेट्स के लिए चैनल को सब्सक्राइब करना न भूलें...

You tube

घर बैठे प्रतिदिन सामान्य अध्ययन के लिए अंग्रेजी एवं हिंदी सहित विभिन्न समाचार पत्रों के आर्टिकल एवं उससे संबंधित संभावित प्रश्नों तथा PIB सहित विभिन्न Current Affairs की पीडीएफ एवं अन्य उपयोगी जानकारी प्राप्त करने के लिए QR Code स्कैन कर के हमारे वेबसाइट (www.gsworldias.com) से जुड़ें...

Website

नोट:- QR Code Scan करने के लिए अपने Mobile के Play Store से कोई भी QR Code Scanner Install करें...

Delhi Centre
629, Ground Floor, Main Road,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Ph.: 011-27658013, 7042772062/63

Prayagraj Centre
GS World House, Stainly Road,
Near Traffic Chauraha, Prayagraj
Ph.: 0532-2266079, 8726027579

Lucknow Centre
A-7, Sector-J, Puraniya Chauraha
Aliganj, Lucknow
Ph.: 0522-4003197, 8756450894